Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

भारत लोग और अर्थव्यवस्था

कक्षा -12

अध्याय - 3

भूसंसाधन तथा कृषि

साधन मानव की आवश्यकता की पूर्ति

भूमि

भाग - 6

रामावतार यादव

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

भू - संसाधन

भारत के प्रशासनिक इकाईयों का क्षेत्रफल
= $32,87,263 km^2$

भारतीय सर्वेक्षण विभाग - देहरादून

भू - संसाधन को उपयोग के आधार पर 9 भागों में बाँटा
= राजस्व विभाग

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

भारत में कृषि विकास

- स्वतंत्रता से पूर्व की स्थिति
- स्वतंत्रता पश्चात सरकार ने खाद्यान्नों की अत्यधिक कमी को देखते हुए तात्कालिक उपाय किये-

1. व्यापारिक फसलों के स्थान पर खाद्यान्नों को उगाया जाना।
2. कृषि गहनता को बढ़ावा देना।

$$\frac{\text{सकल बोया गया क्षेत्र}}{\text{निवल बोया गया क्षेत्र}} \times 100$$

3. कृषि योग्य बंजर तथा परती भूमि को कृषि भूमि में परिवर्तित करना।

खाद्यान्न फसलों की कमी।

पंच वर्षीय योजना

प्रथम - 1951 - 56

प्राथमिकता → कृषि

II पंचवर्षीय → 56 - 61 → "उद्योग"

III पंचवर्षीय → कृषि व उद्योग

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

1950 के दशक में गहन कृषि जिला कार्यक्रम (IADP) तथा गहन कृषि क्षेत्र कार्यक्रम (IAAP) प्रारंभ किये

→ जिला कार्यक्रम
→ क्षेत्र कार्यक्रम

- 1960 के दशक में अकाल से देश में अन्न संकट उत्पन्न होने के कारण भारी मात्रा में आयात करना पड़ा।

अकाल
आयात
→ 1966-67
→ हरित क्रान्ति

- इसी समय मैक्सिको में गेहूँ व फिलिपींस में चावल की किस्मों में सुधार कर उत्पादन में अत्यधिक वृद्धि की।

जनक- M.S स्वामीनाथन
प्रभावी फसल → (1) चावल (2) गेहूँ
प्रभावी राज्य → (1) पंजाब (2) हरियाणा

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- भारत ने प्रेरित होकर सिंचाई सुविधा वाले क्षेत्रों में एम. स्वामीनाथन के नेतृत्व में हरित क्रान्ति शुरू की। 1966-1967
- इससे उर्वरक, कीटनाशक, कृषि यंत्र, कृषि आधारित उद्योग आदि में निवेश हुआ।
- 1988 में कृषि जलवायु नियोजन प्रारंभ किया इससे कृषि, पशुपालन व जल कृषि के विकास पर बल दिया। → 1988 कृषि जलवायु नियोजन सम्बन्धित
- 1990 के दशक में उदारीकरण नीति तथा उन्मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था ने भारतीय कृषि विकास को भी प्रभावित किया।

श्वेत क्रान्ति → दुग्ध उत्पादन

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

भारतीय कृषि की समस्याएँ

1. अनियमित मानसून पर निर्भरता
   - भारत में केवल एक-तिहाई क्षेत्र में ही सिंचाई हो सकती है।
   - मानसून की अनिश्चितता एवं अनियमितता से कृषि पर नकारात्मक प्रभाव
2. निम्न उत्पादकता
   - अंतर्राष्ट्रीय स्तर की अपेक्षा भारत में फसलों की उत्पादकता कम है।
   - शुष्क क्षेत्रों में मोटे अनाज, दालें, तिलहन की खेती की जाती है यहाँ इनकी उत्पादकता कम है।

जुलाई 1991
नयी औद्योगिक निति लागु
(निजिकरण, उदारीकरण, वैश्वीकरण)
P.M → P.V नरसिम्हाराव

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

3. वित्तीय संसाधनों की बाध्यताएँ तथा ऋणग्रस्तता

- आधुनिक कृषि से लागत बहुत आती है।
- छोटे व सीमांत किसान कर्ज लेने के कारण समस्याग्रस्त रहते हैं।

4. भूमि सुधारों की कमी

- हालांकि स्वतंत्रता पश्चात जमींदारी प्रथा का उन्मूलन कर भूमि सुधार कार्यक्रम चलाये गये थे परन्तु कमजोर राजनीतिक इच्छाशक्ति के कारण ये पूर्ण रूप से लागू नहीं हो पाये।



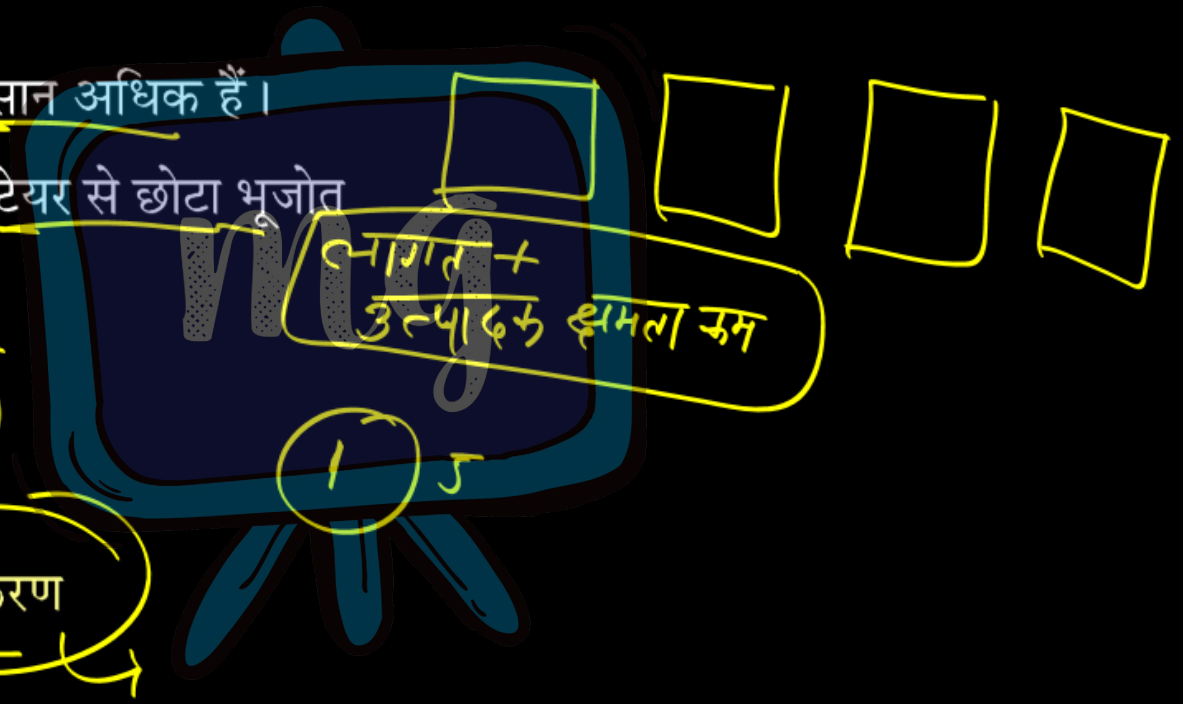
Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

5. छोटे खेत विखंडित जोत

- भारत में सीमांत व छोटे किसान अधिक हैं।
- 60% किसानों के पास 1 हैक्टेयर से छोटा भूजोत है।

6. वाणिज्यीकरण का अभाव
7. व्यापक अल्प रोजगारी
8. कृषि योग्य भूमि का निम्नीकरण



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

प्रश्न 1. नीचे दिए गए चार विकल्पों में से सही उत्तर को चुनिए।

(i) निम्नलिखित में से कौन-सा भू-उपयोग संवर्ग नहीं है?

(क) परती भूमि

(ख) सीमान्त भूमि

(ग) निवल बोया क्षेत्र

(घ) कृषि योग्य व्यर्थ भूमि।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

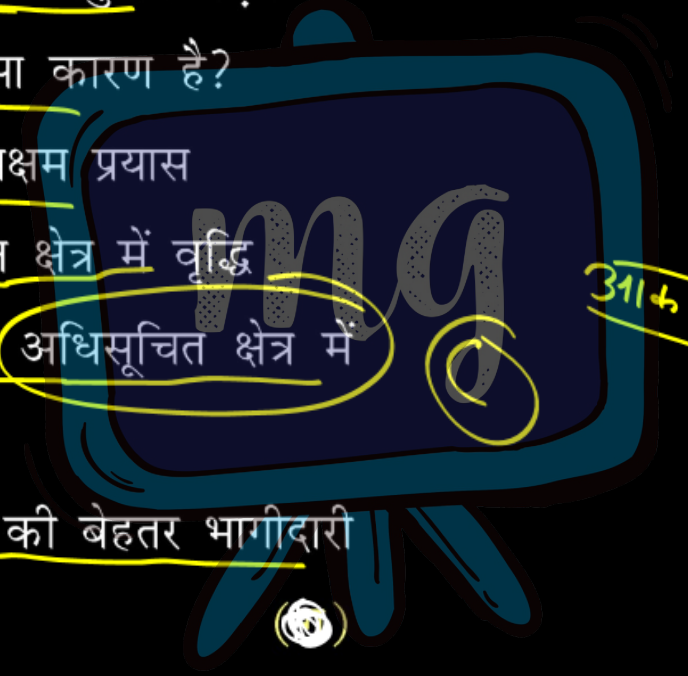
(ii) पिछले 40 वर्षों में वनों का अनुपात बढ़ने का निम्नलिखित में से कौन-सा कारण है?

(क) वनीकरण के विस्तृत व सक्षम प्रयास

(ख) सामुदायिक वनों के अधीन क्षेत्र में वृद्धि

(ग) वन बढ़ोत्तरी हेतु निर्धारित अधिसूचित क्षेत्र में वृद्धि

(घ) वन क्षेत्र प्रबन्धन में लोगों की बेहतर भागीदारी



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

(iii) निम्न में से कौन-सा सिंचित क्षेत्रों में भू-निम्नीकरण का मुख्य प्रकार है?

(क) अवनालिका अपरदन

(ख) वायु अपरदन

(ग) मृदा लवणता

(घ) भूमि पर सिल्ट का जमाव



चम्बल नदी → उत्खात भूमि = बीहड़

(ग)

(क)

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

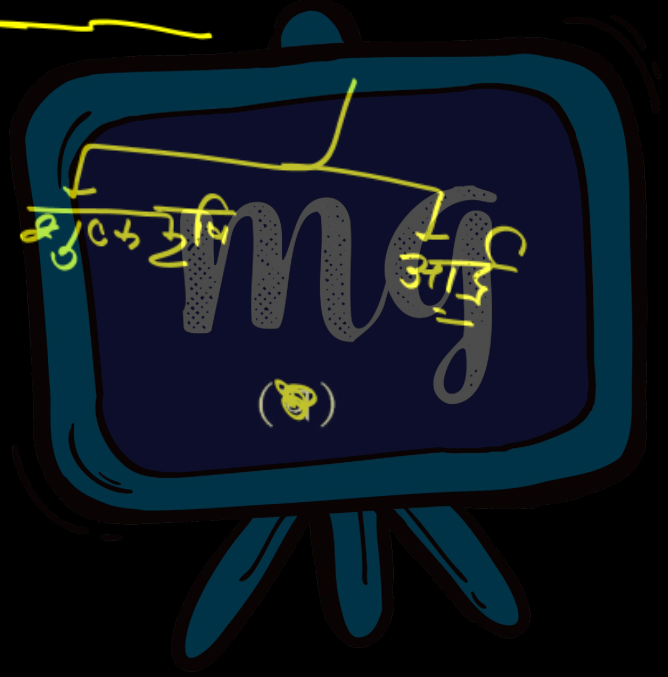
(iv) शुष्क कृषि में निम्नलिखित में से कौन-सी फसल नहीं बोई जाती!

(क) रागी

(ख) ज्वार

(ग) मूँगफली

(घ) गन्ना



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

(v) निम्नलिखित में से कौन-से देशों में गेहूँ व चावल की अधिक उत्पादकता की किस्में विकसित की गई थीं?

(क) जापान तथा आस्ट्रेलिया

(ख) संयुक्त राज्य अमेरिका तथा जापान

(ग) मैक्सिको तथा फिलीपींस

(घ) मैक्सिको तथा सिंगापुर

(ग)

↳ नॉरिन बोरलॉग - हरित क्रान्ति → 1966-67

M. S. स्वामीनाथन

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लगभग 30 शब्दों में दें।

(i) बंजर-भूमि तथा कृषि योग्य व्यर्थ भूमि में अन्तर स्पष्ट करें।

उत्तर - बंजर-भूमि ऐसी भूमि होती है जिसे प्रचलित प्रौद्योगिकी की मदद से कृषि योग्य नहीं बनाया जा सकता, जबकि कृषि योग्य व्यर्थ भूमि ऐसी भूमि होती है जो पिछले पाँच वर्षों तक या अधिक समय तक परती या कृषि रहित हो लेकिन इस भूमि को कृषि वर्ष में विभिन्न फसलों के अन्तर्गत बोये गये कुल क्षेत्र को सम्मिलित किया जाता है।

बंजर भूमि
↓
सिंचाई
उर्वरक
↓
कृषि नहीं

5 वर्ष + परती
कृषि योग्य व्यर्थ भूमि
↓
सिंचाई
उर्वरक
↓
कृषि कर सकते।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

(ii) निवल बोये गये क्षेत्र तथा सकल बोये गये क्षेत्र में अन्तर बताएँ।

उत्तर – निवल बोये गये क्षेत्र में वह भूमि सम्मिलित होती है जिस पर फसलें उगायी व काटी जाती हैं, जबकि सकल बोये गये क्षेत्र में एक कृषि वर्ष में विभिन्न फसलों के अन्तर्गत बोये गये कुल क्षेत्र को सम्मिलित किया जाता है।

निवल बोया गया क्षेत्र → 100 हेक्टेयर
Net (शुद्ध)
100 हेक्टेयर
कृषि → रबी → 100
जायद → 100
खरीफ → 100
300

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

(iii) भारत जैसे देश में गहन कृषि नीति अपनाने की आवश्यकता क्यों है?

उत्तर – भारत जैसे देश में कृषि भूमि की कमी तथा मानवीय श्रम की अधिकता है। ऐसी स्थिति में गहन कृषि नीति की आवश्यकता केवल भूमि उपयोग हेतु ही आवश्यक नहीं है वरन् देश के ग्रामीण क्षेत्रों से बेरोजगारी को कम करने के लिये भी आवश्यक है। जिससे कृषि उत्पादन को भी बढ़ाया जा सके।

भूमि –
मानव श्रम
रोजगार
||
उत्पादकता

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

(iv) शुष्क कृषि तथा आर्द्र कृषि में क्या अन्तर है?

उत्तर – शुष्क कृषि में शुष्कता सहन करने वाली कृषि फसलें (जैसे–रागी, बाजरा ग्वार, चना तथा मूँग) उगाई जाती है तथा ऐसे क्षेत्रों में आर्द्रता कृषि के अन्तर्गत अधिक पानी की आवश्यकता वाली फसलें (जैसे –चावल, जूट, गन्ना आदि) उत्पादित की जाती हैं आर्द्र कृषि क्षेत्रों में वर्षा कृषि फसलों की आवश्यकता से अधिक प्राप्त होती है। इस कृषि में जल की बाहुल्यता मिलती है।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

प्रश्न 3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 150 शब्दों में दें।

(i) भारत के भूसंसाधनों की विभिन्न प्रकार की पर्यावरणीय समस्याएँ कौनसी हैं? उनका निदान कैसे किया जाए?

उत्तर – भारत के संसाधनों पर दबाव के कारण अनेक पर्यावरणीय समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं जिनमें निम्नलिखित पर्यावरणीय समस्याएँ उल्लेखनीय हैं-

(i) मृदा उर्वरकता में ह्रास : कृषि भूमि पर तेजी से बढ़ती जनसंख्या के बढ़ते दबाव से कृषि उत्पादकता बढ़ाने के उद्देश्य से जहाँ एक ओर दलहनों के कृषि क्षेत्र में कमी आ रही है, वहीं

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

दूसरी ओर बहु-फसलीकरण में बढ़ोत्तरी होने से परती भूमि के क्षेत्र में उल्लेखनीय कमी आई है। इससे भूमि में पुनः उर्वरकता पाने की प्राकृतिक प्रक्रिया अवरुद्ध हुई है जैसे नाइट्रोजनीकरण। साथ ही पर्याप्त मात्रा में रासायनिक उर्वरक तथा कीटनाशक रसायनों का प्रयोग भी भारतीय कृषकों द्वारा किया जा रहा है। उक्त कारणों से भारत के विभिन्न क्षेत्रों की मृदा उत्पादकता में ह्रास अनुभव किया जा रहा है। सिंचाई तथा कृषि विकास की दोषपूर्ण नीतियों के कारण यह समस्या और भी गम्भीर हो गई है।

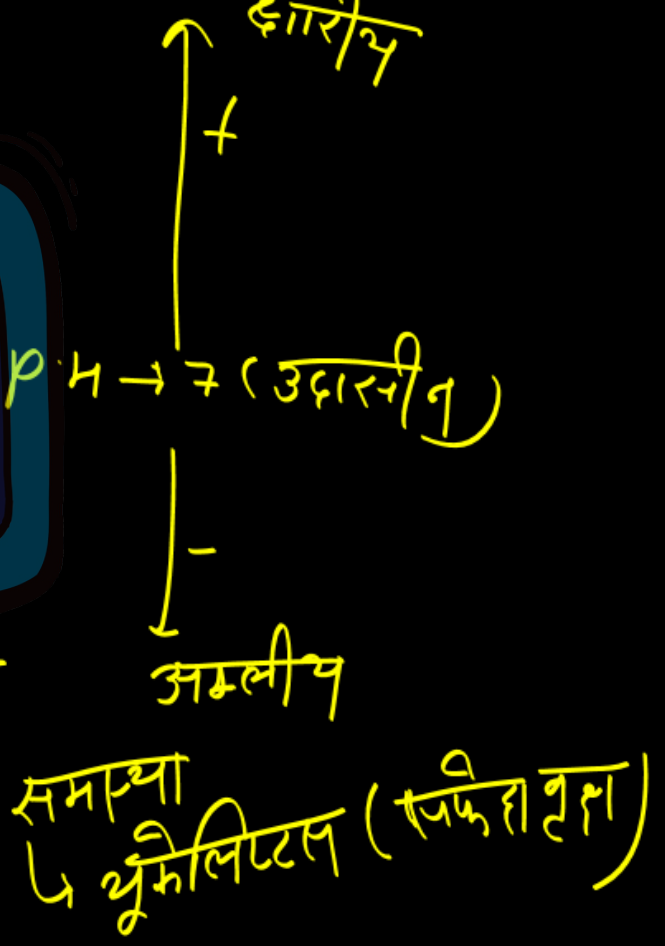
उर्वरक उपयोग

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

(ii) मृदा अपरदन : भारत में समुचित रख-रखाव व प्रबन्धन के अभाव में प्रतिवर्ष लाखों हेक्टेयर भूमि मृदा अपरदन की समस्या से ग्रस्त हो रही है। शुष्क क्षेत्रों, पर्याप्त वर्षा प्राप्त करने वाले वनस्पति विहिन क्षेत्रों, जलोढ़ मिट्टी वाले भागों, कट-फटे पठारी भागों में तथा तीव्र ढाल रखने वाले धरातलीय भू-भागों में मृदा अपरदन प्रमुख रूप से प्रभावी मिलता है।

(iii) लवणता एवं मृदा क्षारता तथा जलाक्रांतता : अभी तक भारत की लगभग 80 लाख हेक्टेयर भूमि लवणता व क्षारता से प्रभावित हो चुकी है। इसके अलावा देश की लगभग 70 लाख हेक्टेयर

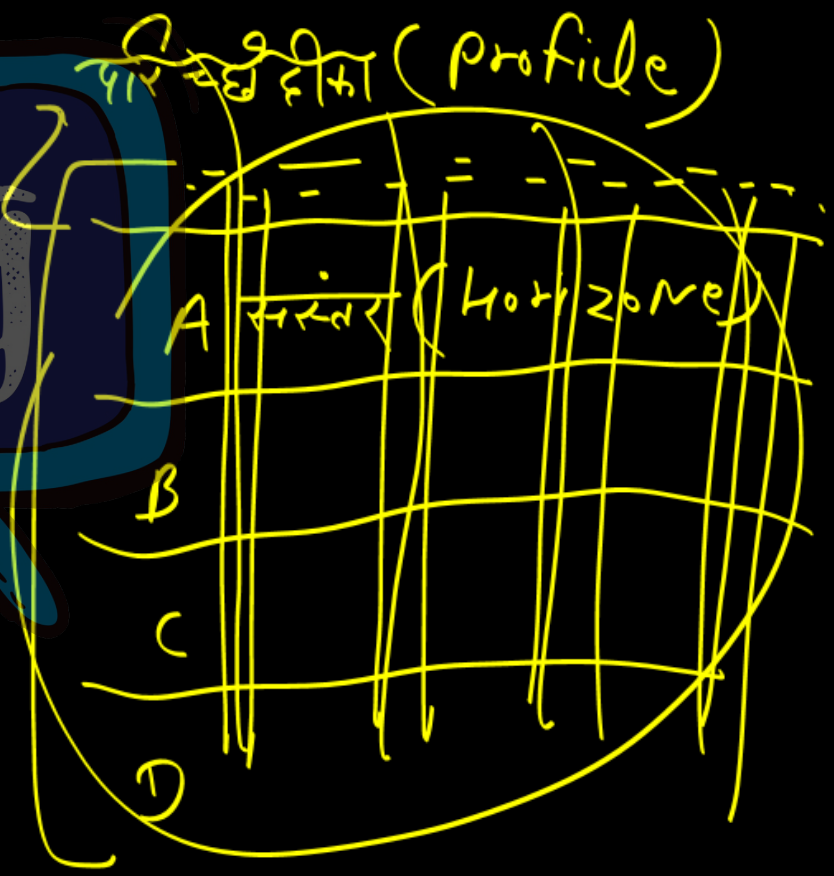


Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

भूमि जलाक्रांतता के कारण अपनी उर्वरकता खो चुकी है।

(iv) मृदा परिच्छेछिका में जहरीले तत्वों का जमाव : भारतीय कृषकों द्वारा कृषि भूमि में अत्यधिक कीटनाशक रसायनों के प्रयोग से वहाँ की मृदा परिच्छेदिका में जहरीले तत्वों का जमाव बढ़ रहा है जिसके कारण कृषि उत्पाद भी विषैले हो रहे हैं जिनके उपयोग से मानवीय स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

भूसंसाधनों की पर्यावरणीय समस्याओं का निदान

(i) मृदा उत्पादकता में ह्रास, मृदा अपरदन, लवणता तथा जलाक्रांतता की समस्या से निपटने के लिये कृषि भूमि के समुचित रख-रखाव व प्रबन्धन सम्बन्धी वैज्ञानिक विधियों का समुचित उपयोग आवश्यक है।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

(ii) कृषि फसलों में रासायनिक उर्वरकों के स्थान पर जैविक उर्वरकों का अधिकाधिक उपयोग किया जाये। साथ ही, खाद्यान्न फसलों के साथ-साथ दलहनी फसलों की कृषि को पर्याप्त प्रोत्साहन दिया जाए।

जैविक उर्वरको

दाल/फसल → मिट्टी में नाइट्रोजन

(iii) मृदा परिच्छेदिका में कीटनाशक रसायनों के जमाव को रोकने के लिए कृषि वैज्ञानिकों की सहायता लेकर फसलों को सुरक्षित किया जाए।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

(ii) भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात कृषि विकास की महत्वपूर्ण नीतियों का वर्णन करें।

उत्तर – भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् कृषि विकास की महत्वपूर्ण नीतियाँ : भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व भारतीय कृषि एक जीविकोपार्जन करने वाली प्रक्रिया के रूप में थी तथा इसकी स्थिति बहुत ही दयनीय थी। देश में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत सरकार का तात्कालिक उद्देश्य खाद्यान्नों के उत्पादन को बढ़ाना था। इस हेतु सरकार द्वारा निम्नलिखित उपायों को अपनाया गया–

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

(i) व्यापारिक फसलों के स्थान पर खाद्यान्न फसलों का उगाया जाना।

(ii) कृषि गहनता को बढ़ाना तथा

(iii) कृषि योग्य बंजर भूमि तथा परती भूमि को कृषि भूमि में परिवर्तित करना। यद्यपि प्रारम्भ में इस नीति से खाद्यान्नों का उत्पादन बढ़ा लेकिन 1950 के दशक के अंत तक कृषि उत्पादन स्थिर हो गया।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

इस समस्या के समाधान के लिए निम्नलिखित दो उपायों को बल प्रदान किया गया-

(अ) गहन कृषि जिला कार्यक्रम

(ब) गहन कृषि क्षेत्र कार्यक्रम।

1960 के दशक के मध्य में लगातार दो अकाल पड़ने से देश में खाद्यान्न का गम्भर संकट उत्पन्न हो गया अतः इसके बाद कृषि विकास हेतु निम्नलिखित उपायों पर जोर दिया गया-

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

1. अधिक उत्पादन करने वाले बीजों का उपयोग :

1960 के दशक में कृषि विकास हेतु मेक्सिकन गेहूँ तथा फिलिपींस के चावल की अधिक उपज देने वाली किस्मों की कृषि प्रारम्भ की गई जिससे पश्चिमी उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, आन्ध्र प्रदेश तथा गुजरात के पर्याप्त सिंचाई सुविधाएँ रखने वाले कृषि क्षेत्रों के खाद्यान्न उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। जिसे भारत में हरित क्रान्ति का नाम दिया गया। सन् 1980 के बाद हरित क्रान्ति का विस्तार मध्य भारत तथा पूर्वी भारत के

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

विभिन्न भागों में भी सफलतापूर्वक किया गया। हरित क्रान्ति के कारण देश खाद्यान्नों में आत्मनिर्भर हो गया।

2. कृषि जलवायु नियोजन : 1980 के दशक में भारतीय योजना आयोग ने वर्षा आधारित क्षेत्रों की कृषि समस्याओं पर ध्यान तो दिया ही साथ ही आयोग ने सन् 1988 में कृषि विकास में प्रादेशिक सन्तुलन को प्रात्साहित करने हेतु कृषि जलवायु नियोजन प्रारम्भ किया। इस प्रयास से कृषि, पशुपालन तथा जल कृषि के विकास हेतु संसाधनों के विकास को बल मिला।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

3. उदारीकरण नीति तथा उन्मुक्त बजार अर्थव्यवस्था

: 1990 के दशक की उदारीकरण नीति तथा उन्मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था से भारतीय कृषि विकास के क्षेत्र में नवीन आयामों का सूत्रपात हुआ।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

1. **गैर कृषि-कार्यों में प्रयुक्त भूमि के अन्तर्गत सम्मिलित हैं-**

(क) ग्रामीण व शहरी बस्तियाँ

(ख) सड़कें व नहर

(ग) उद्योग व दुकानें

(घ) उक्त सभी ✓



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

2. भारत में गैर-कृषि कार्यों में प्रयुक्त भूमि का प्रसार निम्न में से किस क्षेत्र की भूमि की हानि पर रहा है?

(क) वन क्षेत्रों की

(ख) कृषि भूमि की

(ग) कृषि योग्य व्यर्थ भूमि

(घ) कृषि भूमि तथा कृषि योग्य व्यर्थ भूमि दोनों की



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

3. ऐसी कृषि योग्य भूमि जो एक वर्ष से अधिक लेकिन पाँच वर्षों से कम समय तक कृषि रहित रहती है, कहलाती है-

(क) वर्तमान परती भूमि

(ख) पुरातन परती भूमि

(ग) कृषि व्यर्थ भूमि

(घ) बंजर व्यर्थ भूमि



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

4. सन् 1950-51 की तुलना में सन् 2014-15 में निम्न में से किस भू-उपयोग संवर्ग के अनुपात में वृद्धि दर्ज नहीं की गयी–

(क) बंजर एवं व्यर्थ भूमि

(ख) वन क्षेत्र

(ग) गैर-कृषि कार्यों में प्रयुक्त भूमि

(घ) वर्तमान परती भूमि



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

5. भारत के उत्तरी व आन्तरिक भागों में फसल ऋतुओं की संख्या है-

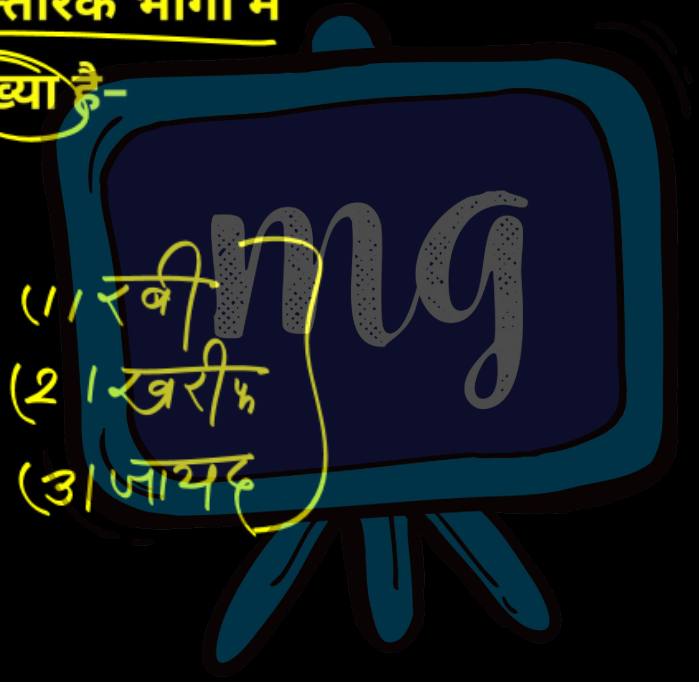
(क) एक

(ख) दो

(ग) तीन ©

(घ) चार

(1) रबी
(2) खरीफ
(3) जायद



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

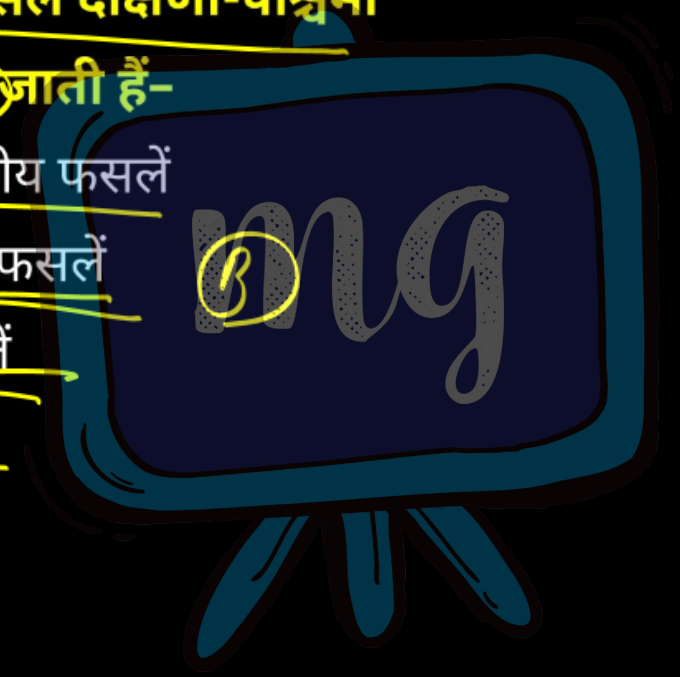
6. निम्न में से कौन सी फसलें दक्षिणी-पश्चिमी मानसून के साथ बोयी जाती हैं-

(क) शीतोष्ण कटिबन्धीय फसलें

(ख) उष्ण कटिबन्धीय फसलें

(ग) वाणिज्यिक फसलें

(घ) रोपण फसलें



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

7. चावल उत्पादन में भारत का विश्व में स्थान है-

(क) प्रथम

(ख) द्वितीय (उ.)

(ग) तृतीय

(घ) पंचम



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

8. **भारत में चावल उत्पादन में अग्रणी युग्म राज्य हैं–**

(क) उत्तर प्रदेश – पश्चिमी बंगाल

(ख) पश्चिमी बंगाल – आन्ध्र प्रदेश

(ग) पश्चिमी बंगाल – पंजाब

(घ) पंजाब – आन्ध्र प्रदेश

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

9. चावल के पश्चात् भारत का दूसरा प्रमुख अनाज है-

(क) गेहूँ

(ख) मक्का

(ग) बाजरा

(च) ज्वार

A



भारत प्रमुख खाद्यान्न फसल क्रमशः चावल एवं गेहूँ

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

10. निम्न में से कौन-सी एक खाद्य एवं चारा फसल है-

(क) गेहूँ

(ख) दालें

(ग) अरहर

(घ) मक्का



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

11. लाल चना एवं पिजन पी. के नाम से जाना जाता है-

(क) अरहर को

(ख) चना को

(ग) सरसों को

(घ) सोयाबीन को



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

12. एक उष्ण कटिबन्धीय फसल जो भारत के अर्द्ध शुष्क भागों में खरीफ ऋतु में बोयी जाती है-

(क) गेहूँ

(ख) चावल

(ग) कपास ✓

(घ) गन्ना



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

13. गन्ना उत्पादन में भारत का विश्व में स्थान है-

(क) पहला

(ख) दूसरा

(ग) तीसरा

(घ) चौथा



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

14. भारत में सर्वाधिक चाय उत्पादन करने वाला राज्य है-

(क) असम

(ख) पश्चिम बंगाल

(ग) तमिलनाडु

(घ) कर्नाटक



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

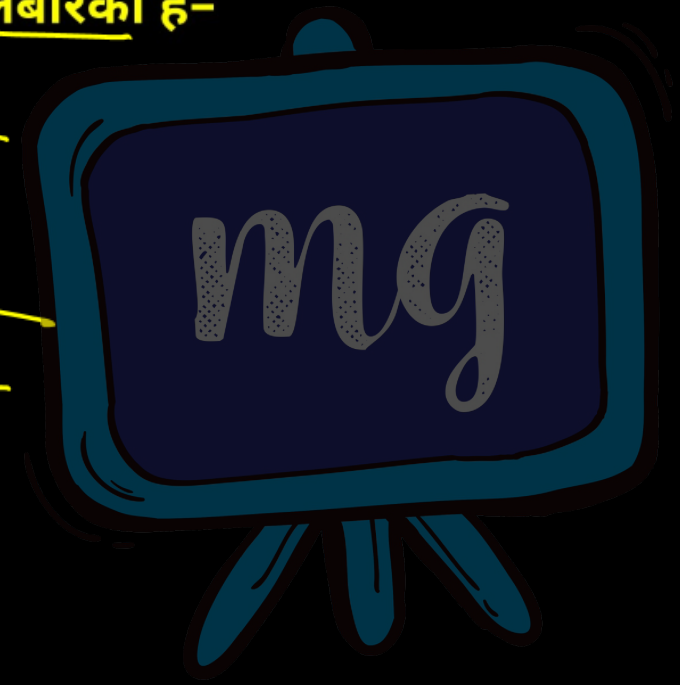
15. अरेबिका, रोबस्ता व लिबेरिका हैं-

(क) चाय की किस्में

(ख) गेहूँ की किस्में

(ग) चावल की किस्में

(घ) कॉफी की किस्में



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

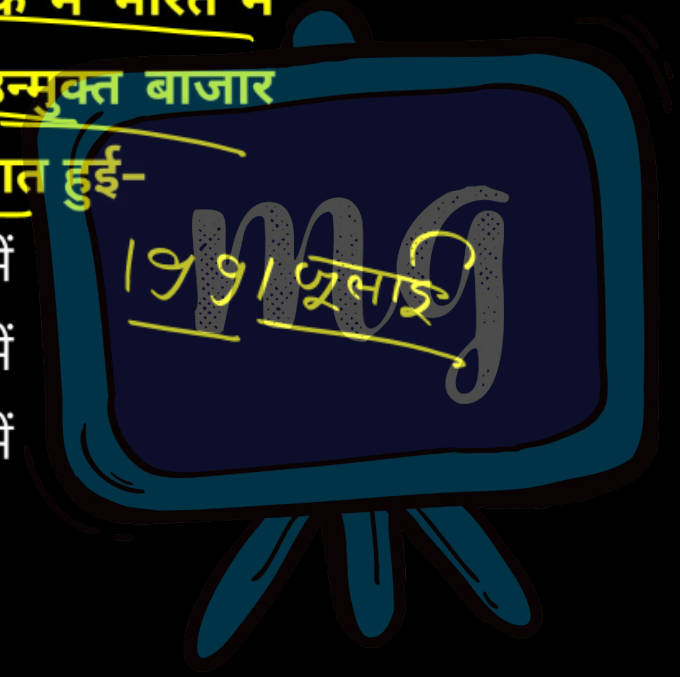
16. निम्न में से किस दशक में भारत में उदारीकरण नीति व उन्मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था की शुरुआत हुई-

(क) 1990 के दशक में

(ख) 1951 के दशक में

(ग) 2000 के दशक में

(घ) उपर्युक्त सभी



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

17. ऋत्विक बेरोजगारी मिलती है-

(क) परिवहन क्षेत्र में

(ख) सेवा क्षेत्र में

(ग) कृषि क्षेत्र में

(घ) विनिर्माण क्षेत्र

